पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना

विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना (ई.एस.आई.पी.) सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन और जीविका लाभ के माध्यम से अनुकूलन आधारित शमन के लिए मॉडल का प्रदर्शन करके ग्रीन इंडिया मिशन के लक्ष्यों का समर्थन करता है। ई.एस.आई.पी. जैवविविधता और कार्बन स्टॉक सहित प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के लिए नए उपकरण और प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रहा है। परियोजना के मुख्य घटक हैं: वानिकी और भूमि प्रबंधन कार्यक्रमों में सरकारी संस्थानों की क्षमता को मजबूत करना, वन गुणवत्ता में सुधार करना, और सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणालियों को बढ़ाना। ई.एस.आई.पी. को भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के समग्र मार्गदर्शन में भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्, छत्तीसगढ़ वन विभाग और मध्य प्रदेश वन विभाग द्वारा मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों के चुनिन्दा भूभागों में क्रियान्वयित किया जा रहा है।

प्रकाशित :

ई.एस.आई.पी.– परियोजना कार्यान्वयन इकाई
जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन प्रभाग
भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
वेबसाइट : www.icfre.gov.in

कॉपीराइट@ICFRE, 2020

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

परियोजना निदेशक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224831
ई–मेल : projectdirectoresip@gmail.com

परियोजना प्रबंधक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224803, 2750296, 2224823
ई–मेल : rawatrs@icfre.org; esippm@gmail.com

बीजामृत

स्वस्थ बीज उत्तम फसल

सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

बीजामृत क्या है?

बीजामृत का उपयोग जैविक खेती में बीजों व रुपायी वाली पौंध के लिए किया जाता है जिससे फसल तथा अन्य पौंध को मिटटी व बीज जनित बीमारियों से बचाया जा सके।

बीजामृत
बीजों की स्वास्थ्यवर्धक औषधि

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा बीजामृत बनाने का प्रशिक्षण

मिटटी के बर्तन में बीजामृत का भण्डारण

बीजामृत को उपयोग करने का तरीका

10 लीटर बीजामृत 100 किलोग्राम बीजों के लिए पर्याप्त होता है। बीजों को इसमें सीधे भिगोया जा सकता है या बीजों में इसका छिड़काव किया जा सकता है। उसके 20–25 मिनट बाद बीजों को छाँव में सूखाकर बुवाई की जा सकती है। इसका उपयोग दाल और बहुत छोटे आकर बीजों के अलावा किसी भी प्रकार के पौंधों के बीज व रुपायी वाली पौंध के लिए किया जा सकता है।

बीजामृत उपचारित बीज

बीजामृत से बीजों का उपचार करते ग्रामीण

बीजामृत बनाने के लिए आवश्यक सामग्री

1. देशी गाय का ताजा गोबर	–	5 किलोग्राम
2. गौमूत्र	–	5 लीटर
3. उपजाऊ मिटटी	–	50 ग्राम
4. बुझा चूना	–	50 ग्राम
5. पानी	–	20 लीटर

ग्राम खटपुरा (म.प्र.) में बीजामृत बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम

बीजामृत पानी बनाने की प्रक्रिया

- गोबर को कपडे की पोटली में डालकर 10 से 12 घंटे के लिए रस्सी की सहायता से पानी में लटका दे।
- फिर इस पोटली को तीन–चार बार अच्छी प्रकार से पानी में निचोड़ कर गोबर का सारा रस निकाल लें। इसी प्रकार मिटटी और चूने को भी पानी में अलग अलग घोल लें और इस पानी को फिर गोबर वाले निचुड़े पानी में डालकर अच्छे से हिलायें।
- इसमें गोमूत्र और पानी मिलाकर प्लास्टिक की बाल्टी में डाल दें। इसमें 10 ग्राम के करीब हींग भी डाल सकते हैं।
- बाल्टी का मुँह किसी कपडे से बांधकर छायादार स्थान में रात भर के लिए छोड़ दें। बीजामृत बनकर तैयार हो जायेगा।

बीजामृत बनाते समय ध्यान देने योग्य बातें

- बीजामृत को मिटटी या प्लास्टिक के बर्तन में ही बनायें।
- नर्म छिलके वाले बीजों के बीजोपचार के समय विशेष सावधानी बरतें अन्यथा बीज सही से अंकुरित नहीं होंगे।

जैविक खेती का महत्त्व

जैविक खेती पारितंत्र (जल, जंगल, जमीन) और फसलों को रासायनों के दुष्प्रभाव से बचाकर मानव व प्रत्येक जीवधारी को स्वस्थ जीवन प्रदान करती है। जैविक खेती सतत् भूमि एवम पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली 'एकीकृत कृषि विकास' की महत्त्वपूर्ण घटक है जो पारितंत्र की सेवाओं को बढ़ाने में काफी कारगर है। जैविक खेती में प्रयोग किये जाने वाली जैविक खाद भूमि की उर्वरता को लम्बे समय तक बनाकर रखने के साथ–साथ पर्यावरण को प्रदूषित होने से भी बचाती है साथ ही कम लागत में उत्तम गुणवत्ता वाली अधिक उपज देती है।

बीजामृत से होने वाले लाभ

यह बीजों की अंकुरण क्षमता बढ़ाता है व जड़ों और पौंधों के विकास की प्रक्रिया करने के साथ बीमारियों से भी उनकी रक्षा करता है। इसके अलावा पत्तियों, तनो, फलों व फसल आदि में फफूंदी से होने वाली बींमारियों में भी यह काफी कारगर है।

बीजामृत उपचारित पौंध